किन्तु आशीर्लिङ् का होने से 'यासुट्'
ङित् रहे, अतः उसके परे होने से प्रकृत'
सूत्र से गुण का निषेध होजाता है। तब
'भूयात्' रूप सिद्ध होता है।

Topic 13

भ्वादिगण आशीर्लिङ् लकार

लिङाशिषि ।

आशीषि लिङस्तिङ् आर्धधातुकसंज्ञः स्यात् ।

आशीर्वाद अर्थ में लिङ् स्थानिक तिङ् को आर्धधातुक संज्ञा होती है। यह पूर्ववर्ती सूत्र 'तिङ् शित्-०' का अपवाद है।

किदाशिषि ।

आशीषि लिङो यासुट् कित् । 'स्कोः संयोगाद्योः' इति सलोपः ।

आशीर्वाद अर्थ में लिङ् सम्बन्धी 'यासुट्' 'कित' होता है। उदाहरण के लिए 'भू' धातु से आशीर्वाद अर्थ में लिङ् आने पर प्रथम एकवचन में ति होता है — 'भू + तिप्' ।

क्ङिति च ।

गित - कित - ङिन्निमित्ते इग्लक्षणे गुणवृद्धी न स्तः।
भूयात्, भूयास्ताम्, भूयासुः । भूयाः, भूयास्तम्, भूयास्त । भूयासम्, भूयास्व, भूयास्म ।

गित्, कित् और ङित् परे होने पर तन्निमित्त के स्थान पर गुण और वृद्धि नहीं होती। उदाहरण के लिए 'भूयात्' में यात् आर्धधातुक परे होने से - सार्वधातुकार्धधातुकयोः से इगन्त अङ्ग 'भू' के अन्त्य ऊकार को गुण प्राप्त होता है।